274-
सोनाक्षी का खुद कभी भी पढ़ाई में रुझान नहीं रहा।

"पिताजी की तरह," उन्होंने स्वीकार किया, "मुझे भी पढ़ाई में कभी बहुत रुचि नहीं थी। लेकिन नहीं, मैं उनकी तरह रंगीन या अतिवादी नहीं थी। लेकिन अधिकांश अन्य मामलों में, मैं अपने पिता की तरह ही हूँ। यह सच है कि मुझमें उनका जिद्दीपन है। मुझमें उनका आत्मविश्वास, उनकी निर्भीकता भी है, उनके व्यक्तित्व का बहुत कुछ मुझमें है।

"मेरे पिता की तरह, जब मुझे कुछ चाहिए होता है, तो मैं उसके पीछे भागती हूँ, यहाँ तक कि उसे पाने के लिए अपनी हदें भी पार कर जाती हूँ," उसने समानताएँ गिनाईं। "अगर मैंने अपने लिए कोई लक्ष्य तय कर लिया है, जैसे कि वजन कम करना, तो मैं उसे हासिल करना सुनिश्चित करती हूँ। पहले, जब से मैं याद कर सकती हूँ, माँ मेरे वजन को लेकर मुझ पर बहुत गुस्सा करती थी। मुझे जिम जाना बिल्कुल पसंद नहीं था। मैंने पहले भी सब कुछ आज़माया था - जिम जाना, डाइटिंग, स्ट्रेचिंग क्लासेस, किताब में मौजूद हर तरकीब। एक समय ऐसा आया जब माँ ने मुझसे मेरे वजन के बारे में बात करना बंद कर दिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने ऐसा क्यों किया और फिर मैंने अपनी मर्जी से अपना वजन कम करने का लक्ष्य तय किया। मैं तब अठारह या उन्नीस साल की थी। मैं परिणाम से खुश थी, इसलिए मैंने और वजन कम किया। धीरे-धीरे, मैंने अपना सारा वजन कम कर लिया। इस तरह, मैं अपने पिता की तरह जिद्दी हूँ। अगर मुझे कुछ चाहिए, तो मैं जानती हूँ कि इसे कैसे हासिल करना है।

"शुरू में पिताजी इस प्रक्रिया के प्रति उदासीन थे, लेकिन एक बार जब उन्होंने इसे होते देखा, तो उन्हें बहुत गर्व हुआ, बहुत खुशी हुई, मैं उनमें यह बात देख सकती थी। पहले, वह मुझे चिढ़ाते थे, मज़ाक में मुझे मोटी कहते थे। वह मुझे सर्कस क्वीन कहते थे, क्योंकि अगर मेज़ पर कुछ भी खाना होता, तो मैं उसे गायब कर देती थी।

"अपने पिता की तरह मुझे भी खाने का बहुत शौक है। आज भी है," उन्होंने उन आम खूबियों को गिनाना जारी रखा जो दोनों में समान हैं। "लेकिन मैंने मात्रा पर नियंत्रण करना सीख लिया है। पहले मेरे लिए यह सब-खाने-के-लिए-खाने वाला बुफे था, अब यह बहुत-कम-खाने वाला बुफे है।"

सोनाक्षी और उनके पिता के बीच जो भी समानताएं हों, उनके अभिनेत्री बनने का कारण उनके पिता से अधिक उनकी मां थीं।

सोनाक्षी ने खुलासा किया, "मेरे अभिनेत्री बनने में माँ का बहुत बड़ा हाथ था।" "मुझे लगता है कि यह उनका सपना था कि मैं एक अभिनेत्री बनूँ। उन्होंने कम उम्र में ही शादी के बाद अभिनय करना छोड़ दिया; इसने उनके जीवन के उस हिस्से को खत्म कर दिया। इसलिए मुझे लगता है कि वह यह सब मेरे माध्यम से देखती हैं, वह चाहती हैं कि मेरे साथ भी ऐसा हो। मैं अन्यथा कभी ऐसा नहीं करती। वह मुझे प्रोत्साहित करती रहीं, प्रोत्साहित करती रहीं। जब मैंने अपना वजन कम करना शुरू किया, तो वह कहती थीं, अब तुम अभिनय करना शुरू कर सकती हो। वह कभी-कभी अपने प्यारे अंदाज़ में संकेत देती थीं। वह निश्चित रूप से इस विचार के खिलाफ़ नहीं थीं।

"दबंग में काम करने का प्रस्ताव बहुत बढ़िया था; यह लगभग होम प्रोडक्शन जैसा था। मेरे परिवार को पूरा भरोसा था कि खान ऐसा कुछ नहीं करेंगे जिससे उन्हें शर्मिंदगी उठानी पड़े। जब दबंग बनी, तो मुझे अपने माता-पिता को यह बताने की

ज़रूरत नहीं पड़ी कि मैं अभिनय करना चाहता हूँ। यह सिर्फ़ अनुमान था कि मैं अभिनय करूँगा। माँ जानती थीं कि यह होगा और पिताजी को अंततः पता चल गया कि यह होगा।"

275-
उसके लिए यह स्वाभाविक था कि वह ऐसी भूमिकाएं, वेशभूषा और व्यवहार चुने जिससे उसके माता-पिता किसी भी तरह से परेशान न हों।

"मैं कभी भी अपने कारण पिताजी को परेशानी में नहीं डालना चाहता। हम उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि के बारे में जानते हैं, हम जानते हैं कि वे कहां से आते हैं और हम इसे खतरे में नहीं डालना चाहते।"

राजनीति में ज्यादा रुचि न रखने वाली सोनाक्षी ने उनकी राजनीतिक कहानी से यह सीखा कि किस तरह से उन्होंने असफलता और सफलता को संभाला।

उन्होंने गर्व से कहा, "उन्होंने अपने अभिनय करियर को अपने चरम पर छोड़ दिया और राजनीति में शामिल हो गए।" "एक बार जब वे राजनीति में आए, तो उन्होंने अपना सबकुछ झोंक दिया। आज वे जिस मुकाम पर हैं, वहां पहुंचने में उन्हें काफी समय लगा है। सबसे अच्छी बात यह रही है कि हमने उन्हें कभी परेशान, उदास या निराशा व्यक्त करते नहीं देखा। यहां तक कि अगर वे किसी निराशा का सामना कर रहे होते, तो भी वे उसमें कुछ सकारात्मक देखते और उस पर काम करते। जैसे कि जब 2004 में भाजपा चुनाव हार गई, तो हमने उन्हें कभी किसी कोने में बैठे या किसी से बात न करते नहीं देखा। वे हमेशा यही सोचते रहते थे कि आगे क्या करना है। जब भाजपा चुनाव हार गई, तो उन्होंने अपना मंत्री पद भी खो दिया। लेकिन हमने उन्हें कभी इस बात पर रोते नहीं देखा कि क्या हुआ था। वे हमेशा आगे की ओर देखते हैं, बहुत सकारात्मक रहते हैं।"

दबंग की डबिंग के दौरान सोनाक्षी को एक और गुण का पता चला जो उनके पिता के साथ साझा था। निर्माता अरबाज खान ने उनकी डबिंग के लिए ज़रूरत से ज़्यादा तारीखें अलग रखी थीं क्योंकि वह नई थीं। "लेकिन मैंने इसे आधे समय में पूरा कर लिया," उन्होंने खुशी से कहा। "मैंने सोचा, ठीक है, मुझे कम आंकते रहो लेकिन मत भूलना, शत्रुघ्न सिन्हा की बेटी हूँ।" सलीम अंकल मुझे पिताजी की डबिंग के बारे में कई कहानियाँ सुनाते थे। या कई बार जब वे शूटिंग के लिए देर से आते थे और एक शॉट में तीन पेज का संवाद याद कर लेते थे, वह भी बिना पढ़े। एक सहायक उन्हें इसे पढ़कर सुनाता था और वे इसे समझ लेते थे। लेकिन मेरे पास उस तरह की असाधारण याददाश्त नहीं है। मेरी याददाश्त उतनी ही खराब है जितनी उनकी अच्छी है। यह एक ऐसा गुण है जो मुझे उनसे विरासत में नहीं मिला है।

"मेरे पास जो है वह है उनका आत्मविश्वास। यहां तक कि जब मैं पहली बार रैंप पर चली थी, तब भी मुझे कोई घबराहट नहीं हुई थी।"

हालांकि, सोनाक्षी और उनके पिता ने स्टारडम के साथ मिलने वाली प्रसिद्धि को जिस तरह से संभाला, उसमें बहुत अंतर था। जहां एसएस इसके लिए तरसते रहे, इसे अर्जित किया और आज भी इसका आनंद लेते हैं, वहीं सोनाक्षी को यह जन्म से ही इतनी आसानी से मिल गया कि उन्होंने इसे हल्के में लिया, यहां तक कि कई बार उन्हें यह बात परेशान करने वाली भी लगी।

"मुझे पता है कि ध्यान क्षेत्र के साथ आता है," उसने सोचा, "लेकिन मुझे इसमें बहुत मज़ा नहीं आता। मुझे अपना निजी स्थान पसंद है। अगर मैं दोस्तों के साथ डिनर के लिए बाहर जाती हूँ, तो मैं नहीं चाहती कि दस लोग आकर तस्वीरें लेने के लिए कहें। दूसरी ओर, पिताजी को स्पॉटलाइट पसंद है; वह ध्यान का केंद्र बनना चाहते हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ हम हैं।
276-
बिलकुल अलग। मैं इससे दूर भागता हूँ, वह वहाँ रहना चाहता है।

"लेकिन मैं समझती हूँ कि यह उनके लिए अलग रहा है," उन्होंने स्टारडम के प्रति उनके दृष्टिकोण में अंतर का अध्ययन करते हुए कहा। "वह एक छोटे शहर से आया था जहाँ जीवन में उसकी महत्वाकांक्षा एक फिल्म स्टार बनने की थी जबकि हमने पहले ही यह सब उसके माध्यम से देखा था। जब हम बच्चे थे, तब से हमने लोगों को ऑटोग्राफ और तस्वीरें लेने के लिए उसके पास आते देखा है। इसलिए हमारे लिए यह बिल्कुल भी नया अनुभव नहीं था।"

सोनाक्षी को अपने स्टारडम के बाद मिलने वाली प्रसिद्धि पसंद नहीं आई, लेकिन बचपन में उन्होंने अपने पिता की झलक पाने का भरपूर आनंद लिया। उन्होंने उत्साह से कहा, "मैंने शत्रुघ्न सिन्हा की बेटी होने का हर तरह से आनंद लिया है।" "हमने पूरी दुनिया में बेहतरीन पारिवारिक छुट्टियां मनाई हैं। उन्हें हमेशा जो विशेष व्यवहार मिलता था, वह हमें भी मिलता था और मैंने इसका पूरा आनंद लिया।"

दरअसल, उन्हें अक्सर अपने पिता की दूरगामी प्रसिद्धि आकर्षक लगती थी। "एक बार," उन्होंने बताया, "हम शिकागो गए थे और हम होटल की पार्किंग से बाहर निकल रहे थे, जहाँ एक नाइजीरियाई महिला टिकट ले रही थी। मेरे पिता ने खिड़की खोली और उसे पैसे दिए और जब उसने उन्हें देखा, तो उसने कहा, 'खामोश!' मैं बहुत हैरान रह गई; मैंने सोचा, 'क्या? वह नाइजीरियाई है और वह आपको "खामोश" कह रही है?" सोनाक्षी ने याद करते हुए दिल खोलकर हँसा। "उसने मुझे वाकई चौंका दिया। यह तब हुआ जब हम बहुत छोटे थे, इसलिए मुझे अपने जीवन में बहुत पहले ही एहसास हो गया था कि उनकी प्रसिद्धि भारत तक ही सीमित नहीं थी, वे दुनिया भर में जाने जाते थे।"

बहुत पहले ही उनके बच्चों को छुट्टियों के दौरान पिताजी के मूड में होने वाले बदलाव का पता चल गया था।

सोनाक्षी ने कहा, "जब हम विदेश जाते थे, तो वह निश्चित रूप से अधिक सहज होते थे।" "वह हमारे साथ मॉल में जाते थे, लंच और डिनर के लिए बाहर जाते थे। भारतीय लोग आते और नमस्ते कहते, ऑटोग्राफ लेते और वह हमेशा ध्यान को बहुत अच्छी तरह से संभालते थे।

"पिताजी आमतौर पर उन जगहों पर जाना पसंद करते हैं जहाँ हमारे दोस्त होते हैं। उन्हें शिकागो, ऑस्ट्रेलिया, एलए, न्यूयॉर्क पसंद हैं। एक बार वे मुझे लास वेगास ले गए और हम सभी संगीत और नाटक देखने गए। वे जुआ नहीं खेलते लेकिन हम कैसीनो में टहलते थे।"

एक उदार पिता के रूप में, एसएस को अपने बच्चों की खरीदारी सूची से कभी कोई समस्या नहीं हुई।

सोनाक्षी ने कहा, "मैं उनके लिए खुशकिस्मत हूँ कि मैं बिगड़ी हुई नहीं हूँ, मैं ज़्यादा कुछ नहीं माँगती।" "अपने आप में, उन्होंने मुझे मेरे शुरुआती सालों

में काफ़ी हद तक बिगाड़ा और उससे भी ज़्यादा। हर बार जब वे यात्रा करते, तो उन्हें नहीं पता होता कि मेरे लिए क्या लाएँ, इसलिए वे लोगों से सामान लाने के लिए कहते। कम से कम उनका आधा सूटकेस मेरे लिए चीज़ों से भरा होता।"

277-
जहाँ वह अपने बच्चों के लिए बिना किसी झिझक के खरीदारी करता था, वहीं एसएस ने अपने लिए शायद ही कभी कुछ खरीदा हो - उसकी ज़रूरतें पूरी तरह से पूनम के विभाग की थीं। सोनाक्षी ने हँसते हुए कहा, "माँ उसकी सारी खरीदारी करती है, जब बात खुद की आती है तो वह एक उंगली भी नहीं उठाता।" बेटी ने कहा, "उसकी पूरी अलमारी, स्टाइलिंग, सब कुछ मेरी माँ ने किया है। वह बहुत परेशान है कि मैं उसके लिए कुछ भी डिज़ाइन नहीं कर पाई हूँ।"

सोनाक्षी अपने माता-पिता पर भी बहुत ध्यान देती थीं। अगर 2015 में एसएस-पूनम की शादी 35 साल पूरे कर चुकी है, तो उन्होंने इसका पूरा श्रेय अपनी मां को दिया, "मेरी मां की वजह से ही वे साथ रह पाए हैं, यह मैं जानती हूं। वह इतनी मजबूत महिला हैं कि वे किसी भी रिश्ते को टूटने नहीं देंगी।

"वे एक दूसरे के लिए बने थे। एक दूसरे की कमियों के बावजूद उनके बीच बहुत सहनशीलता है," उसने समझदारी से कहा। "यह एक स्वप्निल विवाह है। कौन ऐसा विवाह नहीं चाहेगा?"

इसका जवाब देते हुए सोनाक्षी ने कहा कि वह खुद ऐसी शादी नहीं चाहती क्योंकि एसएस पिता थे और वह कभी किसी और के लिए उनका सौदा नहीं करेंगी, लेकिन जब बात पति की आई तो उन्होंने अपनी आंखें बंद कर लीं। उन्होंने दृढ़ता से कहा, "नहीं, मुझे अपने पिता जैसा आदमी नहीं चाहिए।" "मुझे कोई ऐसा चाहिए जो बिल्कुल विपरीत हो। मुझे कोई ऐसा चाहिए जिसे मैं नियंत्रित कर सकूं, जबकि मेरे पिता पूरी तरह से नियंत्रण से बाहर हों।"

हालाँकि, उसके जुड़वाँ भाई अधिक उदार थे, निश्चित रूप से अपने पिता के बारे में उनके विचार अधिक नरम थे।

जब वे चार या पांच साल के हुए तो लव और कुश को यह एहसास हो गया था कि वे एक सेलिब्रिटी पिता के विशेषाधिकार प्राप्त बच्चे हैं।

कुश ने बताया, "जब हम घर के बाहर खेलते थे तो लोग वहां खड़े होकर पूछते थे, 'शत्रुघ्न सिन्हा जी हैं क्या? ऑटोग्राफ चाहिए।' इससे हमें समझ में आ गया कि वह कितने लोकप्रिय हैं।"

लव ने कहा, "उदाहरण के लिए, जब वह हवाई अड्डे से बाहर आते थे, तो वहां एक बड़ी भीड़ खड़ी होती थी और वे उन्हें देखने के लिए रुक जाते थे। तो आपको एहसास होता था कि वह पूरे देश में जाने-माने व्यक्ति हैं। यहां तक कि जब हम बच्चे थे, तब भी जब हम उनके साथ यात्रा कर रहे थे, तो उनका व्यक्तित्व, उनकी उपस्थिति हमारे आस-पास के माहौल में एक अलग ही बदलाव लाती थी। उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली है कि अगर वह अभिनेता नहीं भी होते, तो भी वे ध्यान आकर्षित करते थे और क्योंकि वह एक अभिनेता हैं, तो यह और भी बढ़ जाता था।"

अभिनेता-पिता के रूप में एसएस अपने बच्चों को स्टूडियो आने या उनकी फ़िल्में देखने से नहीं रोकते थे। कुश याद करते हैं, "जब उनकी फ़िल्मों में उनकी मृत्यु

होती थी तो हम रोते थे। मुझे लगता है कि सभी स्टार बच्चे इस दौर से गुज़रते हैं।"
278-
लव ने कहा, "हमने फिल्में देखना तब शुरू कर दिया था, जब हमें पता भी नहीं था कि वे क्या होती हैं। यही कारण है कि मैं आज भी हर रात एक फिल्म देखता हूं।"

कुश ने कहा, "हम उनकी कई फिल्मों की आउटडोर शूटिंग में गए, जैसे लोहा, ज़लज़ला, आग ही आग। हमने इसका भरपूर आनंद लिया और हमें खुशी हुई कि उन्होंने जो भी किया, उसमें हमें हमेशा शामिल किया।"

एक अभिनेता के जुड़वाँ होने के नाते, उन्हें आम सेलिब्रिटी बच्चों से भी ज़्यादा ध्यान मिला, जब तक कि वे छह साल के नहीं हो गए और सोनाक्षी का जन्म नहीं हो गया। स्पॉटलाइट उन पर से हट गई, लेकिन दोनों भाइयों को इससे कोई खास परेशानी नहीं हुई। कुश ने बताया, "हम दोनों ही उसके बहुत करीब थे।" "हम इस बात को लेकर ज़्यादा उत्सुक थे कि घर में यह नया बच्चा कौन है।"

लव ने स्वीकार किया, "कुश हमेशा उसके करीब रहता था।" "मुझे लगा कि दोनों के बीच बहुत ज़्यादा लाड़-प्यार हो रहा है। मुझे नहीं लगता कि यह गलत है, लेकिन मुझे लगा कि इसमें संतुलन होना चाहिए। सोना को हमेशा लगता था कि जब हर कोई उसे लाड़- प्यार कर रहा होता है, तो मैं अकेला होता हूँ जो ऐसा नहीं करता। इसलिए छोटे भाई-बहन और बड़े भाई-बहन के बीच बहस होती थी। लेकिन कभी कोई बदसूरती नहीं हुई।"

सोनाक्षी की तरह ही दोनों बेटों ने भी एसएस को एक ऐसे पिता के रूप में वर्णित किया जो हमेशा अपने परिवार के लिए समय निकालते थे।

कुश ने कहा, "हमें कभी भी कोई कमी महसूस नहीं हुई।" "वह हमेशा मौकों पर मौजूद रहता था, जब भी कोई बात महत्वपूर्ण होती थी, तो हमेशा अतिरिक्त प्रयास करता था। यही कारण है कि आज तक, जब तक मैं पढ़ाई के लिए देश से बाहर नहीं गया, हमने कभी भी परिवार के साथ नए साल की पूर्वसंध्या नहीं छोड़ी।"

एसएस और पूनम के बीच मतभेद का एक कारण लड़कों को बोर्डिंग स्कूल कोडईकनाल इंटरनेशनल में भेजने का फैसला था। पूनम को अपनी बात मनवा ली जबकि एसएस कभी भी बच्चों को घर से दूर भेजने के पक्ष में नहीं थे।

"हाँ, हम जानते हैं कि वह हमें भेजना नहीं चाहता था," लव ने कहा। "लेकिन मुझे लगता है कि यह एक अच्छा निर्णय था। हम मुंबई में जितना सीखते और सीखते, उससे कहीं ज़्यादा सीखकर वापस आए। हम तेरह, चौदह साल के थे जब हमें बताया गया कि हम दूसरे स्कूल में जाएँगे। पहले डेढ़ साल मुश्किल थे लेकिन फिर हम ठीक हो गए।

उन्होंने आगे कहा, "मुझे मुश्किल दौर भी पसंद आया।" "इससे हमें निश्चित रूप से मदद मिली। पहले साल, आप अलग-थलग महसूस करते हैं। फिर आप सभी एक साथ आते हैं; यह एक बहुत ही दिलचस्प सामाजिक प्रयोग है।"

पहली बार जब वे अपने माता-पिता से अलग हुए तो उन्होंने खूब रोया, लेकिन यह बहुत बड़ी मदद थी कि वे हमेशा एक-दूसरे के साथ थे। इसके अलावा, दोनों के माता-पिता भी एक हफ़्ते के लिए उनके साथ रहने के लिए आए थे ताकि वे उन्हें बसा सकें।

279-

में।

कुश ने कहा, "मेरे कहने का मतलब यही है कि वह हमेशा हमारे साथ थे। उन्होंने कभी हमें यह महसूस नहीं होने दिया कि वह हमारे लिए मौजूद नहीं हैं।"

उन्होंने कभी भी अपने बच्चों पर हाथ नहीं उठाया, जिनमें लड़के भी शामिल थे।

लव ने कहा, "उसने कभी हमें नहीं मारा, लेकिन हमेशा अपनी बात रखी।" "उसने हमेशा हमसे कहा है कि तुम्हें खुद को कड़ी मेहनत से आगे बढ़ाना होगा। मैं भी इस बात पर यकीन करता हूँ। मेरे साथ हमेशा ऐसा रहा है कि तुम सीखना बंद नहीं कर सकते। मैं अभी भी योग और मार्शल आर्ट की क्लास लेता हूँ। समय क्यों बर्बाद करना? ये साल कभी वापस नहीं आने वाले। कभी-कभी मुझे लगता था कि जब मैं पहले से ही इतनी मेहनत कर रहा हूँ, तो वह हम पर इतना दबाव क्यों डाल रहा है? लेकिन अब मैं समझता हूँ कि शायद मुझे लगता था, 'मैं श्री सिन्हा का बेटा हूँ, मुझे खुद पर इतना दबाव डालने की ज़रूरत नहीं है।"

कुश ने कहा, "पापा हमेशा हमें अपना दृष्टिकोण समझाते हैं; वे कभी भी इस पर अड़े नहीं रहते।"

लव ने इस विचार को विस्तार से बताया। लव ने कहा, "एक बार हम हैदराबाद में थे और दो कारें इंतज़ार कर रही थीं। एक वातानुकूलित थी, दूसरी नहीं। मैं बहुत छोटा था और जब उन्होंने मुझे दूसरी कार में जाने के लिए कहा, तो मैंने कहा, 'नहीं, मैं वातानुकूलित कार में जाना चाहता हूँ।' उन्होंने मुझे नहीं रोका, उन्होंने उस समय कुछ नहीं कहा। लेकिन बाद में उन्होंने मुझसे पूछा, 'अगर आप दूसरी कार में आते तो क्या फ़र्क पड़ता?' मुझे एहसास हुआ कि इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।"

कुश ने कहा, "उन्होंने हमें कुछ बातें बताई हैं, जिनका हम आज भी पालन करते हैं।" "एक बात यह थी कि उन्हें साइकिल चाहिए थी, लेकिन दादाजी ने उन्हें साइकिल नहीं दिलवाई। इसलिए वे हमसे कहते थे कि आपको बहुत सारी चीज़ें चाहिए, हो सकता है कि आपको हमेशा सब न मिले, लेकिन आप हमेशा उसके लिए काम कर सकते हैं। आप यह नहीं कह सकते कि मुझे वह नहीं मिला और उसके बारे में नकारात्मक सोचते रहें। सकारात्मक सोचें और खुद को बेहतर बनाने की दिशा में काम करें। उन्हें हमेशा हममें दिलचस्पी थी; अब भी है। वे देखते हैं कि हर कोई वही कर रहा है जो उन्हें करना चाहिए। वे कभी भी नाम के पिता नहीं रहे।"

लड़कों द्वारा वर्णित पिता और सोनाक्षी के साथ बड़े हुए लाड़-प्यार से भरे माता-पिता में बहुत अंतर था। वास्तव में, जबकि वह उन्हें काफी सहजता से डैड कहती है, लड़के अधिक औपचारिक 'पापा' कहने के आदी हैं।

हालाँकि, माँ निस्संदेह अनुशासनप्रिय थीं।

कुश ने कहा, "माँ बहुत सख्त थीं। हमें बाथरूम में बंद करने से लेकर लाइट बंद करने तक, वह सब कुछ करती थीं।"

लव ने मुस्कुराते हुए कहा, "एक या दो बार ऐसा हुआ कि पापा ने बाथरूम का दरवाज़ा खोला और हमें बाहर जाने दिया।" "मुझे एक बार याद है जब मैं बहुत रो रहा था और उन्हें लगा कि हमें काफ़ी सज़ा मिल चुकी है, इसलिए उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया।"

280-
सभी लड़के एक स्वर में बोले कि उनके पिता निश्चित रूप से उनके मित्र नहीं हैं।

उन्होंने कहा, "हम उसके साथ मित्रता नहीं रखना चाहते। हम उसके प्रति सम्मान बनाए रखना चाहते हैं।"

लव ने आगे कहा, "मेरे पास बहुत सारे दोस्त हैं। मैं अपने पिता का सबसे अधिक सम्मान करता हूँ। जब मेरा बेटा होगा, तो मैं चाहूँगा कि वह भी मेरा सम्मान बनाए रखे, मेरा दोस्त न बने।"

शत्रुघ्न और पूनम की शादी की तीसवीं सालगिरह पर, उनके पसंदीदा रेस्टोरेंट में एक छोटे से पारिवारिक डिनर में, कुश अमेरिका की यात्रा के बाद सीधे हवाई अड्डे से पहुंचे। एसएस को बहुत खुशी हुई जब उनके बेटे ने उन्हें एक जोड़ी चश्मा भेंट किया और अपने पिता से कहा, "यह ग्रह पर बचा हुआ एकमात्र चश्मा है!"

कुश ने अपने पिता के लिए उपहार चुनने की प्रक्रिया के बारे में बताया, "मैं अमेरिका में था और मैं सचमुच 45 मिनट तक वहां खड़ा रहा, उनके चेहरे की कल्पना करता रहा और शीशे के सामने अलग-अलग तरह के चश्मे आजमाता रहा।" "90% मामलों में, चश्मा उस व्यक्ति को सूट नहीं करता जिसके लिए आप उसे खरीदते हैं। आश्चर्यजनक रूप से या सौभाग्य से, वह जोड़ा उनके लिए बिल्कुल सही था।

"हर बार जब पापा हमें कुछ देते हैं, तो वे कहते हैं, 'यह आखिरी टुकड़ा है, लाखों में एक।' इसलिए मैंने कहा, 'यह ग्रह पर बचा हुआ एकमात्र टुकड़ा है!"

अन्यथा, दोनों लड़कों के लिए सही उपहार चुनना आसान नहीं है। कुश ने कहा, "एक बार उनकी शादी की सालगिरह पर, मैंने उन्हें उनकी सभी तस्वीरों का एक कोलाज दिया, जिसे मैंने खुद स्कैन किया और एक बड़ा पोस्टर बनाया। मैंने समय निकाला और यह किया। हम इस तरह की चीजें करते हैं।"

लव ने कहा, "सोना उपहार देने में अच्छी है; वह स्केच बनाती है, कार्ड बनाती है। यह उसकी प्रतिभा है।"

अपनी ओर से, जुड़वाँ बच्चों ने भी बहुत समय पहले ही अपने माता-पिता से उपहार मांगने पर पूर्ण विराम लगा दिया था।

लव ने याद किया, "जब हम छोटे थे तो यह पागलपन था। हमें एक ही चीज़ दो बार मिलती थी - अगर किसी को गेम मशीन मिलती थी, तो दूसरे को भी वही मिलती थी। ऐसा तब तक होता रहा जब तक हम आठ साल के नहीं हो गए। फिर माँ ने अपना फैसला बदल दिया। उन्होंने कहा, 'बहुत हो गई जन्मदिन की पार्टियाँ, बहुत हो गए अतिरिक्त उपहार। अब हम कभी कुछ नहीं माँगते, जो हमारे पास है उसके लिए हम आभारी हैं। कोई लालच या ज़रूरत नहीं है। लेकिन पापा ने मुझे अपना पेन दिया," लव ने खुलासा किया। "यह हीरे जड़ा हुआ नहीं है, लेकिन बहुत बढ़िया पेन है। और यह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने मुझे यह दिया है। इस तरह की चीज़ें अब हमारे लिए ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं। मैं उस पेन को अपने बैग में रखता हूँ और इसका इस्तेमाल सिर्फ़ किसी महत्वपूर्ण चीज़ पर हस्ताक्षर करने के लिए करता हूँ।"

कुश ने कहा, "भावनात्मक मूल्य ब्रांड मूल्य से अधिक मायने रखता है।"

281-
सोनाक्षी पर बेशुमार प्यार लुटाने के अलावा, लड़कों को हर दिन अपने माता-पिता के पैर छूने की भी शिक्षा दी गई, साथ ही परिवार के अन्य वरिष्ठ सदस्यों और करीबी पारिवारिक मित्रों के पैर भी छूने की शिक्षा दी गई। लव और कुश आज भी ऐसा करते हैं, लेकिन सोनाक्षी ऐसा नहीं करती, क्योंकि सिन्हा परिवार में दोनों लिंगों के लिए नियम अलग-अलग हैं।

सोनाक्षी ने बताया, "परिवार में लड़कियाँ बड़ों के पैर नहीं छूतीं। मेरे भाई आज भी ऐसा करते हैं। मैं सीधे गले लग जाती हूँ।"

एसएस ने कहा कि वह भी पटना में अपने माता-पिता के पैर हर दिन छूते थे। "और आज मेरे बेटे हर दिन प्रोमी और मेरे पैर छूते हैं," उन्होंने कहा। "हमारे परिवारों में, बेटियाँ ऐसा नहीं करती हैं, इसलिए सोनाक्षी हमारे पैर नहीं छूती हैं। यह हमारे परिवार में एक संस्कार है। जब तक कोई परंपरा विनाशकारी या नकारात्मक नहीं है, मैं उससे बहस नहीं करता। लेकिन हाँ, अगर कोई परंपरा अंधविश्वास को जन्म देती है, तो मैं उस पर बहस करता हूँ और कहता हूँ, तर्क के जादू को काम करने दो।"

लव और कुश को इससे चिढ़ होने की बजाय यह परंपरा बहुत पसंद आई। लव ने कहा, "मुझे ऐसा करते हुए कभी अजीब नहीं लगा। अगर मेरा बच्चा ऐसा नहीं करता, तो मैं शायद उसे ऐसा करने के लिए कहता।"

कुश ने कहा, "इससे सम्मान की भावना स्थापित होती है।"

1975 की इमरजेंसी के बाद जब एसएस पहली बार राजनीति में आए, तब उनकी शादी भी नहीं हुई थी। जब उन्होंने अपना पहला चुनाव लड़ा (1991 में दिल्ली में राजेश खन्ना के खिलाफ), तो जुड़वा बच्चों को इसकी अहमियत का अंदाजा हो गया। उस समय उनका नुकसान पिता से बेटों को यह सीख देने जैसा था कि असफलता को कैसे देखा जाए।

कुश ने नाराजगी जताते हुए कहा, "मुझे लगता है कि उन्हें इस बात का बुरा लगा और मीडिया ने इसे दो सितारों के बीच टकराव के तौर पर पेश किया।" "बहुत सारी नकारात्मक प्रेस ने उनका पीछा किया, लेकिन हमने हमेशा अपने पिता को एक व्यक्ति के तौर पर बहुत मजबूत देखा है। वह भारतीय फिल्म उद्योग से पहले अभिनेता थे जिन्हें कैबिनेट मंत्री बनाया गया था। तो कौन कहता है कि आप अपनी पहली चुनावी विफलता से परिभाषित होते हैं? मेरे पिता खुद कहते हैं, 'शो कभी खत्म नहीं होता।'

"पहला चुनाव हारने के बाद अगर उन्होंने हार मान ली होती, भाजपा से संबंध तोड़ लिए होते और कहा होता कि 'मैं घर जा रहा हूं, फिल्मों में लौटूंगा' तो उन्हें वह हासिल नहीं होता जो उन्होंने किया।"

उन्हें न केवल उनकी राजनीति के बारे में पता था, बल्कि लड़कों को यह भी पता था कि उनके पिता और उनकी शादी के बाहर की महिलाओं के बीच क्या चल रहा था।

लव ने अपने पिता का बचाव करते हुए कहा, "वह बहुत सफल व्यक्ति हैं।"

कुश ने बताया, "हम उनसे नहीं पूछते लेकिन वह इस बारे में मज़ाक करते हैं।" "वह मेरे पिता हैं, मेरे दोस्त नहीं, कि मैं उनसे पूछूं कि क्या हो रहा है?"

सोनाक्षी की तरह, वे भी अपने माता-पिता की शादी को एक ब्लॉकबस्टर सफलता के रूप में देखते थे। हालाँकि, वे उनके प्रति इतने वफादार थे कि उन्होंने उनके पुरुषवादी वर्चस्व का बचाव भी किया।

282
कुश ने कहा, "उनके विचार बहुत मजबूत हैं, इसलिए कुछ महिलाओं को वे अंधराष्ट्रवादी लग सकते हैं। हां, मम्मा को बहुत कुछ त्यागना पड़ा, लेकिन यही कारण है कि वह उनसे इतना प्यार करते हैं और उनका इतना सम्मान करते हैं।"

लव ने कहा, "वह किसी का उतना सम्मान नहीं करता जितना वह उसका करता है।" "माँ हमेशा उसके साथ रही है, बहुत मज़बूत।"

कुश ने कहा, "अगर वह फिल्मों में बनी रहती, तो दो साल में वह शीर्ष नायिका बन सकती थी।" "लेकिन उसने इसे छोड़ने का फैसला किया। उसने उसे ऐसा करने के लिए कहा। आज यह शायद अंधभक्ति लगे। लेकिन उस समय, यह दिन का नियम था। 2015 में इसे देखना और उसे अंधभक्त के रूप में देखना आसान है।"

लव ने अपने पिता का भी समर्थन किया: "उनके विचार बहुत मजबूत हैं, जो एक महिला को अंधराष्ट्रवादी लग सकते हैं।"

कुश ने बीच में कहा, "वह एक मजबूत व्यक्तित्व है। चाहे पुरुष हो या महिला, वह सभी पर हावी रहता है। आप इसे अहंकारवाद कैसे कहेंगे? यह सिर्फ उसका व्यक्तित्व है, लिंग से इसका कोई लेना-देना नहीं है।"

लेकिन उन दोनों ने वही कहा जो दुनिया जानती है: "पापा कोशिश करते हैं कि यह बात सामने न आए लेकिन वे मम्मी पर बहुत अधिक निर्भर हैं।"

इनसाइड रामायण, ए डिफरेंट शत्रुघन सिन्हा रेसीडेड.

एसएस को अपने जीवन में आई दो महिलाओं पर गर्व था और जब उनके बेटों ने उन्हें कुछ अप्रत्याशित झटके दिए तो वे और भी क्रोधित हो गए।

सोनाक्षी, जिन्होंने उनके लिए "बेस्टेस्ट" शब्द गढ़ा था, अपने पिता के दिल में एक विशेष स्थान रखती थीं।

"वह हमारी प्रार्थनाओं का जवाब है," एसएस ने कहा। "वह अपनी माँ की सुंदरता और अपने पिता के आत्मविश्वास का परिणाम है। सोनाक्षी सिन्हा का पिता कहलाना मेरे लिए गर्व की बात है। यह एकमात्र ऐसा रिश्ता है जिसमें ईर्ष्या नहीं होती। एक दरोगा (पुलिस इंस्पेक्टर) चाहेगा कि उसका बेटा कलेक्टर बने, एक कलेक्टर अपने बेटे को राज्यपाल बनते देखना चाहेगा। माता-पिता हमेशा चाहते हैं कि उनके बच्चे बेहतर करें।

"मेरे जीवन में सिर्फ़ दो ही महिलाएँ हैं जिनसे मैं वास्तव में जुड़ा हुआ हूँ - मेरी भारी प्रेमिका और मेरी प्यारी प्रेमिका," उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, उनका चेहरा नरम पड़ गया। "मैं सोनाक्षी से इतना जुड़ा हुआ हूँ कि एक समय ऐसा था जब मैं उसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता था। मैं शरद पवार जैसे लोगों का उदाहरण देता था और कहता था कि उनकी तरह मैं भी अपनी बेटी और दामाद को एक ही घर में अपने साथ रखने की योजना बना रहा हूँ।

"लेकिन हर स्टारडम का अपना असर होता है," उन्होंने स्वीकार किया, काम पर उसकी लंबी अनुपस्थिति के आदी होने के बाद। "कल मैं सोनाक्षी से दूर रहने के बारे में सोच भी नहीं सकता था। लेकिन आज मैं ऐसा कर सकता हूँ। मैं बस यही चाहता हूँ कि वह जहाँ भी रहे खुश रहे।"

283-
यह केवल उसकी स्टारडम ही नहीं थी जिसने उसके दिल को खुश किया। जनवरी 2015 में जब उसने उसे अपने भाई कुश की शादी में होस्टेस की भूमिका निभाते हुए देखा तो उसने उसे फिर से अपना मुरीद बना लिया।

उन्होंने बताया, "मुझे सोनाक्षी में उनकी माँ के गुस्सैल स्वभाव की झलक मिली है।" "लेकिन शादी में, जब सभी कैमरे, मेहमान, हर कोई उनसे मिलना चाहता था, उनके साथ फोटो खिंचवाना चाहता था, तब भी उन्होंने एक बार भी अपनी मुस्कान नहीं खोई। उन्होंने खुद सभी के कपड़ों की देखरेख की। मैं पगड़ी नहीं पहनना चाहता था, लेकिन उन्होंने मुझे पहना दी। उन्होंने एक बार भी लव या किसी और के साथ अपना आपा नहीं खोया। उन्होंने हर व्यक्ति का ख्याल रखा, हर व्यक्ति के साथ पोज दिए। उन्होंने कितनी सहनशक्ति दिखाई, क्या गजब का धैर्य दिखाया। जिस तरह से उन्होंने डांस किया, दूल्हे की बहन के रूप में उन्होंने कितना बेहतरीन प्रदर्शन किया!"

यह विवाह एसएस की पीठ पीछे रचा गया था।

उन्होंने विस्तृत जानकारी दी। "लव की लंदन में रहने वाली एक प्यारी सी गर्लफ्रेंड थी। कुश और तरुणा की मुलाकात उसी के ज़रिए हुई," एसएस ने कहा। "लव ने भले ही अपनी गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप कर लिया हो, लेकिन मुझे वह बहुत पसंद थी। वह जिंदादिल, स्वाभिमानी और एक प्यारे परिवार से थी।

"प्रोमी को पता था कि कुश और तरुणा के बीच क्या चल रहा था, लेकिन उसने मुझे इसके बारे में बहुत बाद में बताया। मैं उसके परिवार से बातचीत के अंतिम चरण में मिला।"

यह इस सीजन की सबसे बड़ी शादी थी जिसमें प्रधानमंत्री मोदी के अलावा शीर्षस्थ कॉर्पोरेट घराने जैसे हिंदुजा, लक्ष्मी मित्तल, अनिल अग्रवाल और दोनों अंबानी भाई तथा शीर्षस्थ नौकरशाह और मशहूर हस्तियां शामिल थीं। दूल्हे के पिता ने खुशी से कहा, "मैं प्रधानमंत्री मोदी का हमेशा आभारी रहूंगा कि उन्होंने मुझे अपनी उपस्थिति और आशीर्वाद से सम्मानित किया।"

एक बार जब एड्रेनालाईन शांत हो गया, तो उन्होंने चिंतन किया और फिल्म जगत के सहकर्मियों और राजनेताओं के बारे में अपनी राय की तरह, उन्होंने अपने बेटों पर भी खुलकर टिप्पणी की। जबकि उन्हें उनके संस्कार और शराब-सिगरेट रहित जीवनशैली पर गर्व था, उन्होंने थोड़ी उदासी के साथ कहा, "मेट्रो शहरों में, अधिकांश बच्चों का अपने माता-पिता के साथ रिश्ता ज़रूरत और लालच पर आधारित होता है। वे अपने माता-पिता की समझदारी के बजाय गूगल को प्राथमिकता देते हैं।"

उन्होंने संक्षेप में बताया कि अपने अभिनय को निखारने के लिए FTII न जाने के बेटे लव के फैसले से वे कितने निराश हैं। एसएस ने कहा, "मैं FTII का बहुत बड़ा प्रशंसक, समर्थक और प्रमोटर रहा हूं।" "लेकिन या तो भ्रम की वजह से या किसी

दोस्त या गर्लफ्रेंड के आग्रह के कारण या फिर गूगल बाबा के कहने पर, उसने FTII में अपना बहुप्रतीक्षित प्रवेश स्वीकार नहीं किया। जब उसने इसे ठुकरा दिया तो मुझे उसका फैसला पसंद नहीं आया।"

284-
उन्होंने इस बात पर भी नाराजगी जताई कि जब 2013 में उनकी बाईपास सर्जरी हुई थी, तो लव उनसे मिलने अस्पताल आए थे, "पूरी तरह सजे-धजे और काले चश्मे लगाए हुए, जैसे कि वे किसी फैशन शो के लिए आए हों।"

उन्होंने आगे कहा, "कभी-कभी अगर मैं अलग-थलग दिखता हूं, तो इसका कारण यह है कि मुझे लगता है कि मैं जो कुछ भी कहता हूं, उसे उनके तराजू और उनकी शर्तों के अनुसार तौला जाता है।"

उन्होंने अपनी इस टिप्पणी के समर्थन में कुश की सगाई और शादी के दौरान उसके अजीब व्यवहार का उदाहरण दिया।

"शादी से एक दिन पहले," अपने बेटों की हरकतों से आहत पिता ने बताया, "हम कुश और उसकी मंगेतर के साथ दिलीप साहब को श्रद्धांजलि देने गए थे। यह एक भावनात्मक अवसर था, जिसमें दोनों परिवार बहुत गर्मजोशी से मिले। कुट्टी, दिल्ली से मेरा पीए जो लगभग पच्चीस वर्षों से मेरे साथ है, भी मौजूद था। वहाँ मौजूद अन्य लोगों की तरह, कुट्टी ने भी अपने मोबाइल से दिलीप कुमार के साथ हम सभी की कुछ तस्वीरें खींचीं। लेकिन अचानक, कुश ने कहा, 'मुझे उन्हें देखने दो' और कुट्टी के फोन से तस्वीरें डिलीट करने लगा। इससे मुझे बहुत दुख हुआ। क्या कुश ने उस दिन सोचा था कि वह मुझसे बड़ा हो गया है कि मैं वहाँ था और दिलीप साहब जैसे वरिष्ठ व्यक्ति के सामने ऐसा कुछ कर सकता हूँ?

"जब मैंने उसे इसके लिए डांटा और कहा कि शायद कुट्टी को याद के तौर पर ये तस्वीरें पसंद आई होंगी, तो उसने कहा, 'मैं उसे कुछ तस्वीरें भेजूंगा।' मुझे यकीन नहीं है कि उसने भेजी हैं या नहीं और इससे मुझे बहुत दुख पहुंचा है।

"यह पहली बार नहीं था जब कुश ऐसा कुछ कर रहा था। जुलाई 2014 में,

लंदन में अपनी सगाई के दिन भरत भैया ने समारोह की कुछ तस्वीरें ली थीं। कुश ने फिर कहा, 'मुझे दिखाओ' और बिना कुछ कहे उन्हें हटा दिया।

"कुश में बहुत सारी खूबियाँ हैं," उसके पिता ने कहा, "लेकिन अपनी शादी के उत्साह में, उसने अपनी तस्वीरों को लेकर जो प्रतिक्रिया व्यक्त की, वह समझ से परे थी। यह उसका काम नहीं था।

उन्होंने कहा, "यही कारण है कि शादी के दौरान भी, हालांकि मैंने दुल्हन के जोड़े के लिए अपना नाटक पति पत्नी और मैं का मंचन किया, लेकिन मैं समारोह के दौरान थोड़ा संयमित था। ऐसा नहीं है कि मैं अपनी पत्नी के साथ खड़ा नहीं था। मैंने अपना कर्तव्य निभाया। शायद यह मेरी गलती है कि मैं अपने करीबी लोगों से इतनी आसानी से प्रभावित हो जाता हूं," उन्होंने एक अन्य घटना के बारे में बात करने से पहले टिप्पणी की जिसने उन्हें तोड़ दिया था।

"शादी से कुछ महीने पहले, हमने मुंबई में चैम्बर्स एट द ताज होटल में करीब चालीस-पचास करीबी लोगों के लिए एक छोटा सा समारोह आयोजित किया था, जो एक ऐसा होटल है जिससे मैं बहुत जुड़ी हुई हूं।"

285-
भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ। मेरी शादी ताज में पैंतीस साल पहले हुई थी, मेरे बेटे की भी। कुछ तस्वीरें ली जा रही थीं और जब मैंने उन्हें देखा, तो मैंने कुश से कहा, 'बड़े अच्छे लग रहे हो।' और उसने पलटकर कहा, 'तुम फिर से शुरू हो गए?' 'फिर से' से उसका क्या मतलब था? या शायद उसका मतलब वैसा नहीं था जैसा लग रहा था। लेकिन उसके बाद, मैं अपनी कुर्सी पर बेसुध होकर बैठ गया। यशवंत सिन्हा, हिंदुजा, हर कोई वहाँ था। आस-पास के लोगों ने सोचा होगा कि मैं हम सभी के जीवन में एक नए क्षेत्र में प्रवेश करने पर प्रतिक्रिया कर रहा हूँ। लेकिन सच तो यह है कि मेरे बेटे ने जो मुझसे कहा, उससे मैं दंग रह गया।

"लेकिन हम क्या कर सकते हैं?" उसने असहाय होकर कहा। "वे हमारे बच्चे हैं। तरुणा बहुत अच्छी लड़की है। जैसा कि मेरी पत्नी कहती है, वह हमारी बेटी है, बहू नहीं।"

उनके अंदर के पिता ने अपनी टिप्पणियों को इस स्पष्टीकरण के साथ संतुलित किया, "लड़के व्यायाम करते हैं, जिम जाते हैं, वे कुशाग्र बुद्धि वाले और बुद्धिमान हैं। मूलतः वे परिवार से बहुत जुड़े हुए हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि इसे कैसे प्रदर्शित किया जाए।"

उन्होंने अपने बेटों का विश्लेषण किया और कुश के लिए चिंता व्यक्त की। "मैं कुश के बारे में अधिक चिंतित हूं क्योंकि वह अपने अंदर बहुत कुछ रखता है। उसे ढीला होना चाहिए, अधिक लचीला होना चाहिए। उसे अपने जीवन में हास्य, मौज-मस्ती की आवश्यकता है। लव अधिक अभिव्यंजक है, बहुत अधिक स्वतंत्र है। मैंने कुश को हमेशा इतना उत्तेजित और गहन रहने के कारण 'बुद्धिजीवी' उपनाम दिया है।"

जिस तरह लव ने एफटीआईआई में प्रतिष्ठित सीट ठुकरा दी थी, कुश ने भी कुछ ऐसा ही किया था जब उसे फिल्म निर्माण का अध्ययन करने के लिए न्यूयॉर्क भेजा गया था।

"अपने कोर्स के पूरा होने से ठीक पहले, वह वापस आ गया," उसके पिता ने स्पष्ट निराशा के साथ याद किया। "मैं वहाँ था जब उसने समय से पहले लौटने का फैसला किया और मैं देख सकता था कि हालाँकि वह आत्मविश्वास दिखा रहा था, लेकिन वह अंदर से संकोची था। मैंने उसके लिए सब कुछ व्यवस्थित कर दिया था, एक प्रथम श्रेणी का टिकट, उसका सामान संभाल लिया था, सब कुछ। लेकिन वह अभी भी स्थिति पर नियंत्रण नहीं कर पा रहा था।

"लव और कुश दोनों अच्छे, होशियार लड़के हैं लेकिन थोड़े लाड़-प्यार में पले हुए हैं।"

एसएस ने अपनी उम्र के हिसाब से समझदारी दिखाते हुए कहा, "पांचों उंगलियां एक जैसी नहीं होतीं। यहां तक कि राज कपूर के परिवार में या किसी और परिवार में भी सभी सदस्यों को एक जैसी सफलता नहीं मिलती। इसमें किसी को शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं है। मुझे पूरा भरोसा है कि एक बार लव और कुश चल पड़ेंगे तो वे हमें बहुत गौरवान्वित करेंगे। सोनाक्षी ने हमें जो गौरवान्वित किया है, उससे कम नहीं।"

एसएस ने फिर संकेत दिया कि उनके परिवार के लिए भविष्य में क्या रखा है। उन्होंने कहा, "मैं लव और कुश को उनके काम से विचलित नहीं कर रहा हूँ।" "लव एक अभिनेता बनना चाहता है और कुश फ़िल्म बनाना चाहता है। लेकिन मुझे लगता है, अगर वे इसे उस तरह का अनुशासन और समर्पण दें जिसके वह हकदार है, तो वे राजनीति में भी बहुत अच्छा कर सकते हैं।"

286-
एसएस द्वारा दोहरी राह अपनाने के बाद, उनकी विरासत स्पष्ट हो गई। सिन्हा परिवार का मुख्य ध्यान फ़िल्मों और राजनीति पर था।

287-

9

दोबारा जन्म

शायद जीवित महसूस करने के लिए मृत्यु के निकट अनुभव की आवश्यकता होती है।

फ्रैंक ओसियन

किसी भी सेलिब्रिटी की ज़िंदगी में ड्रामा के साथ-साथ लोगों का ध्यान आकर्षित करना ही सबसे ज़रूरी होता है। जून 2012 में जब शत्रुघ्न सिन्हा को गंभीर स्वास्थ्य समस्या का सामना करना पड़ा, तब उन्हें ऑक्सीजन की यह खुराक दी गई थी। जब उन्हें आपातकालीन स्थिति में मुंबई के कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल में भर्ती कराया गया, तो अख़बारों और टीवी चैनलों में उत्साह की लहर दौड़ गई। यह इतना अचानक हुआ कि शूटिंग में व्यस्त बेटी सोनाक्षी सिन्हा को भी इस बात का पता नहीं चला और जब भी उन्हें अपने पिता के बारे में कोई संदेश मिला, तो उन्होंने जवाब दिया, "वह ठीक हैं।" हर समय इतने स्पष्टवादी व्यक्ति की विशेषता के विपरीत, परिवार ने एक दूसरे से हाथ मिला लिया; बहुत कम लोगों को पता था कि वह किस हद तक मौत के मुंह में समा गए थे।

"यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी घटनाओं में से एक है," एसएस ने बाद में रिकार्ड किया, जब वह बाईपास सर्जरी के बाद अस्पताल के आलीशान वीआईपी सुइट में आराम कर रहे थे।

4 जून 2012 को, सिन्हा परिवार ने अपने पुनर्निर्मित बंगले में गृहप्रवेश (गृह प्रवेश) किया, जो अब एक भव्य ग्यारह मंजिला इमारत बन गया है। जब परिवार रामायण में वापस आया, तब दीवारों पर पेंट अभी भी ताजा था, यह बंगला चार साल तक एक नए घर में तब्दील होने में लगा था। उन चार सालों में, परिवार ने अभिनेत्री अमृता सिंह के घर को किराए पर लिया था।

288-
कुछ महीनों तक खाली बंगले में रहने के बाद, अपना बैग और सामान लेकर वे ला वी नामक इमारत में स्थित अपने एक मित्र के अपार्टमेंट में चले गए।

इसी अपार्टमेंट में परिवार ने अपनी किस्मत चमकाते हुए देखा। कुलपिता शत्रुघ्न ने दो बार राज्यसभा में सांसद के रूप में काम किया था, लेकिन उन्होंने ला वी से ही चुनाव लड़ा और लोकसभा चुनाव (2009) में शानदार जीत हासिल की। यही पता पांच

सदस्यों वाले परिवार के सबसे छोटे सदस्य के लिए भी सौभाग्यशाली साबित हुआ, जब सोनाक्षी अपनी पहली फिल्म दबंग (2010) की शानदार सफलता के साथ टिनसेल टाउन की चहेती बन गईं।

एसएस ने स्वीकार किया, "लोगों ने कहा कि यह हमारे लिए भाग्यशाली घर है और हम सभी में इसके प्रति जबरदस्त कमजोरी थी।" लेकिन अपने परिचित क्षेत्र में लौटने का उत्साह अन्य सभी भावनाओं पर हावी हो गया। एसएस खुद 2 जून को सोनाक्षी के जन्मदिन पर या 5 जून को जुड़वां बच्चों के बड़े दिन पर अपने बंगले में वापस जाने के लिए उत्सुक थे। लेकिन पूनम की इच्छा प्रबल हुई, जैसा कि घर से जुड़े मामलों में हमेशा होता है, और 4 जून को उनका गृहप्रवेश हुआ।

पहली हलचल 30 जून को हुई, जिस दिन करीबी पारिवारिक मित्र हेमा मालिनी की बेटी ईशा देओल अपनी शादी का रिसेप्शन आयोजित कर रही थीं। बेटे लव के साथ पूनम ने 29 तारीख को शादी में परिवार का प्रतिनिधित्व किया था और एसएस को अगली शाम रिसेप्शन में शामिल होना था। लेकिन बाहर निकलने से ठीक पहले एसएस को सांस लेने में अजीब सी तकलीफ महसूस हुई। उन्होंने हेमा मालिनी के भाई को फोन किया और बताया कि वह ईशा के बड़े दिन में शामिल होने के लिए पूरी तरह तैयार थे, लेकिन उन्हें 'भारी मन से' वापस लौटना पड़ा क्योंकि वह वहां जाकर कोई तमाशा नहीं करना चाहते थे।

"मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मुझे इतनी साँस लेने में तकलीफ़ क्यों हो रही थी," एसएस ने भौंहें सिकोड़ते हुए उन घटनाओं पर ध्यान केंद्रित किया, जिसके कारण उन्हें अंततः सात सप्ताह तक अस्पताल में रहना पड़ा। "मैं कई सालों से योग कर रहा था, परिवार में किसी को भी दिल या फेफड़ों की कोई समस्या नहीं हुई थी।"

अगली रात जब वह अपने करीबी दोस्तों अनु और नवीन मारवाह के घर डिनर के लिए बाहर निकला तो उसे इसे गंभीरता से लेने की कोई जरूरत नहीं थी। लेकिन जब उसने अपने मेज़बानों से खिड़कियाँ खुली रखने और धूम्रपान करने वालों से अनुरोध किया कि वे उसकी मौजूदगी में सिगरेट न पिएँ तो उसे असहजता महसूस हुई। वह स्पष्ट रूप से असहज था और उसने वहाँ डिनर नहीं किया।

पूनम और शत्रुघ्न ने रामायण को माता-पिता की सोच के साथ फिर से बनाया था। "हमें लगा कि बच्चे जल्दी बड़े हो रहे हैं, इसलिए उन्हें एक-एक डुप्लेक्स अपार्टमेंट की ज़रूरत होगी। इसलिए हमने एक ग्यारह मंज़िला घर बनाया जिसमें मेरे व्यायाम और योग के लिए एक छत, जिम के लिए एक मंज़िल, अतिथि कक्ष और एक कार्यालय था, ये सब हमारे अपने उपयोग के लिए था," उन्होंने बताया। एसएस ने यह भी फैसला किया कि उनकी बेटी और उनके बेटे
289-
उन्हें संपत्ति में बराबर का हिस्सा मिलेगा, उनकी विरासत में कोई लैंगिक पक्षपात नहीं होगा।

हालांकि, घर में बसने की खुशी को स्थगित करना पड़ा क्योंकि अभी भी तैयार नहीं हुआ घर बिना किसी चेतावनी के उनके सामने आ गया। "जब हम मारवाह के घर से लौटे, तो मैं हांफने लगा," एसएस ने बताया। "घर का मेरा हिस्सा तैयार नहीं था, इसलिए हमें मंजिल के दूसरे हिस्से में सोना पड़ा। लेकिन यहां मैं हांफने लगा क्योंकि शायद मैं दो दरवाजों पर अभी भी ताजा पेंट की गंध बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। मैं महसूस कर सकता था कि मैं इसके प्रति बुरी तरह से प्रतिक्रिया कर रहा हूं। मैंने डॉक्टर को यह बताने के बाद सो गया कि कुछ गड़बड़ है।"

2 जुलाई को, एसएस ने भाजपा नेता नितिन गडकरी के बेटे की शादी के रिसेप्शन में शामिल होने के लिए दिल्ली जाने के लिए दोपहर 2 बजे की फ्लाइट बुक की थी। लेकिन जब सुबह वह बुरी तरह हांफते हुए उठे, तो उन्होंने इसे शाम 5 बजे की फ्लाइट में बदल दिया। जल्द ही, उसे भी रद्द करना पड़ा। सुबह 10 बजे तक, एसएस को सांस लेने में इतनी तकलीफ हो रही थी कि उन्हें आपातकालीन मदद की जरूरत थी।

"बाद में, डॉक्टरों ने मुझे बताया कि चूंकि मैं इतने सालों से योग कर रहा हूँ, इसलिए इसे स्थिर किया जा सकता है। अन्यथा, यह मुश्किल होता। मैं बिस्तर पर बैठा था, हाँफ रहा था और हांफ रहा था, तभी मेरी पत्नी ने हमारे डॉक्टर और पारिवारिक मित्र डॉ. अग्रवाल को फ़ोन किया, जो इतने अच्छे थे कि उन्होंने हमसे मुलाक़ात का शुल्क भी नहीं लिया। प्रोमी ने उन्हें जल्दी आने के लिए कहा, जब मैंने उसे सुधारा और कहा, 'मुझे तुरंत राहत चाहिए।' यह बात उसे गोली की तरह लगी क्योंकि मैंने अपने पूरे जीवन में कभी भी उससे ऐसा कुछ नहीं कहा था। डॉ. अग्रवाल ऑक्सीजन सिलेंडर लेकर आए, मुझे नीचे उतारा और कार में बिठाया। कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल के सभी शीर्ष डॉक्टरों को पहले ही सूचित कर दिया गया था।

"मेरे स्टाफ़ और मेरे बेटों लव-कुश को जानने वाले किसी ने भी मुझे ऐसी हालत में नहीं देखा था। बाद में जब अमिताभ और जया बच्चन अस्पताल में मुझसे मिलने आए तो उन्होंने भी कहा, 'इन पैंतालीस सालों में हमने कभी नहीं सुना कि आप अस्पताल में भर्ती हुए हों।"

शायद यह ठीक इसलिए था क्योंकि यह उनके लिए पहली बार चौंकाने वाला था कि जब वे अस्पताल गए तो उन्होंने गलती की - ऑक्सीजन मास्क कार में छोड़कर और मरीज को लिफ्ट में 15 मंजिल ऊपर ले जाकर। डॉक्टर उसे उस गंभीर हालत में बिना मास्क के घूमते हुए देखकर हैरान रह गए। उन्हें ग्राउंड फ्लोर पर ही आईसीयू में उसका इलाज करना था। और इसलिए, वे फिर से 15 मंजिल नीचे चले गए, मरीज मुश्किल से सांस ले पा रहा था।

उस खतरनाक स्थिति में भी, एसएस खुश था, वास्तव में अपने सेलिब्रिटी स्टेटस से खुश था। "गलियारों में बहुत सारे लोग थे। मैंने उन्हें हाथ हिलाकर कहा, 'मैं ठीक हूँ, चिंता की कोई बात नहीं है।' हाँ, मेरे पास मेरे दर्शक थे!" वह हँसा।

डॉक्टर खुश नहीं थे। जब उसकी सांसें चरम पर पहुंच गईं तो
290-
पत्नी ने देखा कि उसकी आँखें घूम रही थीं। फ़िल्म प्रेमी ने आगे कहा, "डॉक्टरों ने बाद में कहा कि उन्होंने मुझे एक मिनट के लिए खो दिया था। मैं सुनहरे घंटे के आखिरी पड़ाव पर था, एक सुनहरे मिनट से लटका हुआ था। यह अंतिम रील नंबर 18 की तरह था।"

पूनम ने खतरे को किसी और से पहले ही भांप लिया था। "मेरी पत्नी चिल्लाने लगी, 'पापा, पापा, उठो, उठो,' और मुझे पीटना शुरू कर दिया।" डॉक्टरों ने उसकी छाती पर जोर से थपथपाया, उसके गले में एक ट्यूब डाली, जिससे मस्तिष्क में ऑक्सीजन की आपूर्ति खतरनाक रूप से कम हो गई और मरीज बेहोश हो गया।

"जब मैं शाम को उठा, तो मैं घर जाना चाहता था, लेकिन डॉक्टरों ने मेरी बात नहीं सुनी। फिर मैंने सुइट में ले जाने के लिए कहा, लेकिन जब मैंने डॉक्टरों के

चेहरे पर गंभीर भाव देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि कुछ गंभीर हो रहा है। ट्यूब हटाए जाने के बाद, मेरी आवाज़ गॉडफ़ादर में मार्लन ब्रैंडो की तरह कर्कश हो गई।" फिर उसे तारीख़ देखने का ख़याल आया। मेरे स्थायी मित्र पहलाज निहलानी ने जवाब देने में हिचकिचाहट दिखाई, जब तक कि डॉक्टरों ने उन्हें नहीं बताया, "मिस्टर सिन्हा, आज 6 तारीख़ है।"

वह चार दिनों से बेहोश था।

उनकी जिद्दी मांग के आगे झुकते हुए, एसएस को कुछ समय के लिए सोलहवीं मंजिल पर एक कमरे में शिफ्ट किया गया। लेकिन जब वह फिर से असहाय होकर हांफने लगे और उन्हें नेबुलाइजर दिया गया, तो डॉक्टरों को उन्हें तेजी से वापस आईसीयू में ले जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। अपने सेलिब्रिटी स्टेटस पर उनका गर्व फिर से सिर उठाने लगा, जैसा कि उन्होंने बाद में बताया, "उन्होंने मेरे लिए एक विशेष आईसीयू बनाया था, जिसमें 24/7 मेरी निगरानी करने के लिए कर्मचारी थे। वे इतने दयालु थे कि मैं जब तक वहीं रहा, तब तक मैं जिसे भी चाहता था उसे आईसीयू में बुला सकता था।"

वह एक बार फिर आईसीयू में चले गए और 18 जुलाई को वापस कमरे में आ गए - डॉ. अन्वय मुले ने उन पर बाईपास सर्जरी की थी। उन्हें फेफड़ों की समस्या के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था - वे सांस नहीं ले पा रहे थे - लेकिन डॉक्टरों ने पाया कि उनके दिल में भी समस्या थी - उनके दिल में कुछ रुकावटें थीं।

"मैंने भारत के सर्वश्रेष्ठ एंजियोप्लास्टी विशेषज्ञों में से एक और अस्पताल में एंजियोप्लास्टी के प्रमुख डॉ. जमशेद दलाल और प्रशासनिक प्रमुख डॉ. राम कुमार नारायण से पूछा, 'आप मेरी जगह पर क्या करेंगे?' डॉ. दलाल ने कहा, 'मैं बाईपास करवाकर इस समस्या से हमेशा के लिए छुटकारा पा लूंगा। स्टेंट डालना एक अच्छा विचार है, लेकिन निकट भविष्य में इस प्रक्रिया को फिर से दोहराना पड़ सकता है।' उनके जवाब ने हमारे लिए यह निर्णय पक्का कर दिया कि अस्पताल में रहते हुए ही बाईपास करवा लिया जाए। मैंने किसी से सलाह नहीं ली, क्योंकि जितनी अधिक राय, उतनी ही अधिक उलझन," मरीज ने अपने कमरे में आराम करते हुए बताया।

पटना के मित्र और शिकागो स्थित ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. उपेंद्र कुमार सिन्हा ने कहा, "मुझे तब तक एहसास नहीं हुआ कि वह मेरे लिए कितने मायने रखते हैं, जब तक कि 2012 में उन्हें दिल की बीमारी नहीं हुई और बाईपास सर्जरी नहीं हुई। मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।"

291-
"मैं उसके बिना दुनिया में कुछ भी नहीं कर सकता। हम सभी नश्वर हैं, लेकिन उसके बिना मेरा जीवन अधूरा होगा।"

जैसा कि पहले बताया गया है, यह वह समय था जब खून पानी से ज़्यादा गाढ़ा साबित हुआ। डॉ. भरत सिन्हा को 15 मिनट में टिकट मिल गया और वे अपने छोटे भाई की जांच करने के लिए इंग्लैंड से आए। जब डॉ. मुले ने सर्जरी की, तब वे ऑपरेशन थियेटर में थे। इसी तरह, डॉ. लखन सिन्हा और उनकी पत्नी गीता ने पिछली ग़लतफ़हमियों को भुलाकर हर दिन अस्पताल में निगरानी रखी।

एसएस खुश थे कि उनके बच्चे उनके साथ खड़े थे, जिससे पूनम का मनोबल बढ़ा। "सोनाक्षी हर दिन अस्पताल में मुझसे मिलने आती थी और मैं ही उसे घर वापस जाने के

लिए कहता था। लड़के भी आते थे, लेकिन वे अपनी भावनाओं को व्यक्त करना नहीं जानते थे। कुश हर दिन मेरे बिस्तर के पास मेरा हाथ थामे रहता था। शायद वह डरा हुआ था, लेकिन यह दिखाना नहीं चाहता था। मेरा मामला सीधा-सादा था, लेकिन तरह-तरह की अफ़वाहें उड़ रही थीं। राजेश खन्ना अपनी अंतिम अवस्था में थे, दारा सिंह का निधन हो चुका था। चाहे वह चश्मा पहने हो या नहीं, लव भी हर दिन वहाँ रहता था। तीनों बहुत कर्तव्यनिष्ठ थे, भले ही मैंने सोनाक्षी और कुश को अपने बिस्तर के पास लड़ते हुए सुना हो।"

सर्जरी से एक रात पहले, एसएस ने चुपचाप अपने वकील को बुलाया और अपनी सारी संपत्ति अपनी पत्नी पूनम के नाम कर दी। पूनम ने भी अपनी वसीयत बनाकर सब कुछ उनके नाम कर दिया। यह उन दोनों के लिए एक भावुक पल था।

एसएस ने कहा, "मैंने पूरे होश में, शांत, संयमित होकर अपनी वसीयत पर हस्ताक्षर किए।" "हमने यह काम चुपचाप किया। मुझे नहीं लगता कि बच्चों को भी इसके बारे में पता था।"

"मुझे पता था," उनके चौकस बेटे कुश ने कहा। "जब मैंने वकील को आते देखा, तो मैंने अनुमान लगाया कि पापा उस समय अपनी वसीयत तैयार कर रहे थे।"

मुख्य रूप से भोलेपन और भावनाओं से संचालित होने वाले व्यक्ति के लिए, एसएस के पास वित्तीय कानूनी मामलों के बारे में एक व्यावहारिक प्रवृत्ति थी। दशकों पहले, उन्होंने अन्नपूर्णा को अपने पति के वित्तीय पोर्टफोलियो से परिचित होने की सलाह दी थी। "जब भी सोनू कहता था कि एक महिला को अपने पति के जीवनकाल में परिवार के वित्त और निवेश के बारे में सब कुछ पता होना चाहिए, तो मैं उससे लड़ती थी," अन्नपूर्णा याद करती हैं जो परिवार के बाकी सदस्यों के साथ अस्पताल में थीं।

अन्नपूर्णा को एसएस की सलाह में समझदारी का एहसास तब हुआ जब पटना में एक ठंडी, बर्फीली सुबह में उनके पति नहीं उठे। "जब हम उन्हें जगाने गए, तभी हमें पता चला कि वे अब नहीं रहे," अन्नपूर्णा कांप उठीं। "मेरे पति का दाह संस्कार, अंतिम संस्कार की व्यवस्था, श्राद्ध (अंतिम संस्कार के बाद की रस्में), मुझे कुछ भी याद नहीं है। उसके बाद, सोनू ने सब कुछ संभाल लिया। उसने मेरे चारों ओर एक सुरक्षा कवच बना दिया। कुछ दिनों के बाद, मैं बैंक जाने लगी,

292-
डाकघर में जाकर पता लगाया कि हमारे पास कितना पैसा है और वह कहां है।

"एक दिन उनके दोस्त प्रवीण मेरे पास आए और मेरे हाथ में कुछ देते हुए कहा, 'शत्रुघ्न ने आपके लिए यह भेजा है।' यह एक बड़ी रकम थी और मेरे लिए बहुत उपयोगी थी क्योंकि मैं अपनी वित्तीय स्थिति को लेकर असमंजस में थी। मेरे पति की मृत्यु के बाद, मैं पूरी तरह से सोनू पर निर्भर हो गई हूँ। मेरे पिता, माता, बेटा, बेटी - सोनू मेरे लिए ये सब है।"

वह हमेशा चुपचाप देखभाल करते थे, हमेशा सुरक्षा प्रदान करते थे, और लोगों के साथ खड़े रहते थे, जैसा कि उन्होंने पूनम की बहन अरुणा के साथ किया था, जब उनके पति की युवावस्था में ही मृत्यु हो गई थी।

जब उनकी अपनी सर्जरी की बात आई, तो उन्हें किसी तरह की चिंता नहीं हुई। पिछली रात, वे ICU में एक अनजान सुभाष घई के साथ बैठकर बातचीत कर रहे थे - जब उन्हें पता चला कि बाईपास अगली सुबह के लिए निर्धारित है, तो घई चौंक गए। भोर के तुरंत बाद, प्री-ऑपरेशन प्रक्रिया के लिए ले जाए जाने से एक घंटे पहले, एसएस ने लंबी दूरी से फोन करके अपने जीवनी लेखक से बात की, और किताब के लिए महत्वपूर्ण अपडेट देने का वादा किया।

बाद में उन्होंने दावा किया, "डॉक्टरों ने कहा कि मैं एक सामान्य मामला था।" "ऐसा बहुत कम होता है कि किसी मरीज को 120/80 के रक्तचाप के साथ अस्पताल लाया जाए। आमतौर पर डर, उत्तेजना, घबराहट होती है। लेकिन मैं शांत और स्थिर था।"

सुबह 11.06 बजे जब सर्जरी शुरू हुई, पूनम को ओटी के अंदर डॉ. अग्रवाल से लगातार मैसेज मिलते रहे, जिसमें कट-बाय-कट अपडेट दिया जाता रहा। जब शाम को एसएस ने अपनी आँखें खोलीं, तो उन्होंने अपने बिस्तर के पास पहलाज निहलानी को देखा और उन्हें चिढ़ाते हुए कहा, "तुम कभी नहीं सुधरोगे," क्योंकि उन्हें सर्जरी से पहले आना था, लेकिन वे देर से आए। उन्होंने अपने भाई भरत को भी देखा, जिन्हें उनकी मेडिकल योग्यता के कारण ओटी में जाने की अनुमति दी गई थी।

और उसने अपनी पत्नी प्रोमी को देखा। उसकी छाती पीटने की त्वरित झलक और उसका 24/7 ध्यान उसे एक ऐसे व्यक्ति की कृतज्ञता से भर देता है जिसने अपने पुनर्जन्म को देखा था। "मैं न केवल उसके लिए जीवन के इस दूसरे पट्टे का ऋणी हूं, बल्कि मैं इसे उसके लिए समर्पित करता हूं," उसने कहा। "उस जैसी पत्नियाँ बहुत दुर्लभ हैं। वह परिवार से परे नहीं देख सकती। और जब उसके पति की बात आई, तो वह घर नहीं गई, वह बस अस्पताल चली गई। उसने पूरे समय मेरा मनोबल बनाए रखा। लेकिन उसके समर्पण, उसकी प्रार्थनाओं, उसके स्वर्गदूतों और भगवान में उसके जबरदस्त विश्वास के बिना, मैं यहाँ नहीं होता। महत्वपूर्ण क्षणों में, उसने मुझे याद दिलाया कि कैसे सत्यवान को मौत के मुँह से वापस लाया गया था।" (भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, सावित्री ने मृत्यु के देवता यम से विनती की थी, और अपने पति सत्यवान को मृतकों में से वापस लाने में सफल रही थी।)

293-
स्वर्गदूतों के संदर्भ का एक विशेष महत्व था। पूनम को राफेल के स्वर्गदूतों पर अटूट विश्वास था और वह अपने साथ स्वर्गदूतों पर एक किताब भी रखती थी। ओटी में एक वैज्ञानिक रूप से समझ से परे घटना घटी थी। जब एसएस वहाँ से बाहर आया, तो उसने एक हरे रंग की रोशनी के बारे में बात की जो उसने सर्जरी के रणनीतिक समय पर अपने अवचेतन में देखी थी।

उसे यह नहीं पता था कि पूनम ने डॉ. अग्रवाल के ओटी में जाते ही उनकी शर्ट में एक देवदूत की छोटी सी आकृति रख दी थी। और देवदूतों की पुस्तक में यह स्पष्ट रूप से लिखा था कि उनका आशीर्वाद हरी रोशनी के रूप में प्रकट होगा!

जब एसएस ने अपनी पत्नी पर इतना आभार प्रकट किया और निर्लज्जता से कहा, "मैं इस जीवन के लिए उसका ऋणी हूं," तो उसने तुरन्त उत्तर दिया, "वह भगवान का ऋणी है।"

पूनम ने स्वीकार किया कि वह एक नाजुक बिंदु पर खतरनाक रूप से फिनिश के करीब आ गया था। "मुझे लगता है कि 2 मिनट के लिए वह चला गया था। कुश और मैं वहाँ थे, डॉक्टर एक दूसरे से बात कर रहे थे। अचानक मैंने देखा कि उसकी आँखें ऊपर की ओर घूम रही थीं। यह कुछ बहुत अलग था, बिल्कुल भी सामान्य नहीं था। जिस तरह से वह

दिख रहा था, उसमें कुछ ऐसा था जो उसके स्वभाव से बहुत अलग था। तभी मैंने चिल्लाना शुरू कर दिया, उसकी छाती पीटना शुरू कर दिया, उसे पुकारना शुरू कर दिया, 'पापा, पापा...'"

"यह दिल का दौरा नहीं था," कुश ने कहा। "मैं डॉक्टरों की बातों पर पूरा ध्यान दे रहा था। वे कह रहे थे कि पेंट की वजह से ब्रोन्को-स्पज़्म हुआ था, जिसकी वजह से उसे पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल रही थी। और जब आपको पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल रही होती है, तो इससे मस्तिष्क को नुकसान हो सकता है, दिल पर असर पड़ सकता है, कुछ भी हो सकता है। डॉक्टरों ने कहा कि यह इतनी तीव्रता का था कि यह किसी भी तरह से हो सकता था। इसलिए वह बेहोश हो गया।

"मुझे एहसास हुआ कि यह सिर्फ़ साँस फूलने की समस्या नहीं है, क्योंकि उनके पास एक हार्टबीट मॉनिटर लगा हुआ था और मैं देख सकता था कि उनके दिल की धड़कनें बहुत कम हो रही थीं। मैंने डॉक्टरों को कहते सुना, कैथामाइन, एक हॉर्स स्टेरॉयड लें। यह दिल की धड़कन को तेज़ करने के लिए एड्रेनालाईन का उछाल देने के लिए था। डॉक्टरों ने उन्हें स्थिर रखने और उन्हें बेहोश होने से बचाने के लिए जो भी ज़रूरी था, वह किया।"

कुश ने कहा, "जब हम पहली बार अस्पताल में गए तो मम्मा डरी हुई थीं। जाहिर है, वह उनकी पत्नी हैं।"

उसने सिर हिलाया, "शादी के बत्तीस वर्षों में मैंने उसे कभी भी गंभीर रूप से बीमार या तकलीफ में नहीं देखा।"

कुश अपने पिता के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों से निपटने के तरीके से पूरी तरह खुश नहीं थे। "किसी समय, आपको चीजों को थोड़ा गंभीरता से लेना पड़ता है, आप हमेशा उन्हें कम नहीं आंक सकते।"

पूनम ने इस पर अपनी उंगली रखी: "वह अपने ऊपर लगे प्रतिबंधों से बचने के लिए ऐसा करता है।"

294-
जीवन शैली!"

वह धमाकेदार थी, क्योंकि अस्पताल में ही पति-पत्नी की सामान्य मौखिक झड़प देखी गई थी। "यह निश्चित रूप से उसके लिए एक चेतावनी है," उसने कहा।

"बहुत सारे मिथक हैं," एसएस ने प्रतिवाद किया। उन्होंने आगे कहा, "इसका मेरी जीवनशैली से कोई लेना-देना नहीं है। यह पेंट के प्रति एक अत्यधिक प्रतिक्रिया थी, एक अत्यधिक एलर्जी। ऐसा मेरे साथ पहले भी एक बार हुआ था जब मैंने कोडाइकनाल में अपने बेटों के स्कूल में पराग पर प्रतिक्रिया की थी।" "एक अन्य अवसर पर, मैं चंडीगढ़ में था जब मैं हांफने लगा था, लेकिन पहलाज मेरे लिए पंप लाने के लिए साइकिल पर दौड़ा था और मैं ठीक थी। मैं हर सुबह डेढ़ लीटर पानी पीता हूं। ऐसा नहीं होना चाहिए था। लेकिन यह ताजा पेंट था, शायद मिलावटी सामान था। उफ, यह भयानक था, हांफना... मैं सांस नहीं ले पा रहा था।

"इस जीवनी में लोगों को पहली बार पता चलेगा कि यह टच एंड गो था। जो लोग मुझे मेरी हंसी, मेरी आवाज की गुणवत्ता या मेरे 'खामोश' के लिए जानते हैं, वे नहीं

जानते कि मैं हमेशा के लिए खामोश होने की कगार पर था। अगर ऐसा होता, तो यह जीवनी कभी पूरी नहीं होती।"

एसएस ने स्वीकार किया, "मैं इस बात से इनकार नहीं कर रहा हूं कि किसी भी स्तर पर स्वस्थ जीवन शैली, व्यायाम, लाल मांस से परहेज, कम शराब पीना, जल्दी सोना, अच्छा आराम करना किसी के लिए भी अच्छा होगा। लेकिन अगर मैं रात 12 बजे तक सोता हूं और 8 बजे तक उठता हूं, तो यह आठ घंटे का अच्छा आराम होगा।"

इस पर नाराज़ होकर पूनम ने पूछा, "आप अभी से ही रात 12 बजे तक जागने की बात करने लगे हैं?"

उन्होंने जवाब दिया, "इससे पहले बिस्तर पर जाना कहना आसान है और करना आसान है।" "आप चाहते हैं कि मैं सारा दिन यहीं बैठकर भजन (भक्ति गीत) गाता रहूं?"

यह स्पष्ट था कि सर्जरी अच्छी तरह से हो गई थी और वह अपने लड़ाकू स्वरूप में वापस आ गया था। हमेशा लोगों के प्रति समर्पित रहने वाले एसएस ने अपने संपर्क में आने वाले हर डॉक्टर और उनके बारे में पूछताछ करने के लिए आने वाले हर मेहमान पर नज़र रखी।

अपने दो भाइयों के साथ उनका पुनर्मिलन भी सर्जरी का एक हृदयस्पर्शी उपोत्पाद था।

अन्नपूर्णा ने टिप्पणी की, "यह सब प्रोमी कर रही है।" "जब उन्होंने पुनर्निर्मित रामायण में गृहप्रवेश किया, तो अचानक भगवान के चित्र से एक माला सीधे पूनम पर गिरी। यह उन पर भगवान का आशीर्वाद था।"

पूनम ने पुष्टि की, "पूजा चल रही थी जब माला अचानक मेरे ऊपर गिरी और सभी को लगा, वाह, यह वास्तव में आप पर, इस घर पर भगवान का आशीर्वाद है। एक बार लव और कुश का जीवन और करियर भी पटरी पर आ जाएगा, मेरे जीवन का मिशन पूरा हो जाएगा।"

295-
उन्होंने गृहप्रवेश में एक मनोरंजक पहलू जोड़ा जो एसएस की विशेषता थी, वह व्यक्ति और पति जिसे कोई भी लंबे समय तक नहीं पकड़ सकता था। "वह इन सभी अनुष्ठानों को लेकर बहुत बेचैन हो जाता है और वह पंडितजी को यह कहते हुए जल्दी करवाता रहता है, 'आजकल के बच्चे नहीं बैठते, जल्दी कर लीजिए।' कुश को इतना आश्चर्य हुआ कि उसने कंधे उचका दिए, 'हमने कब कुछ कहा?"

अन्नपूर्णा एसएस की अपरिपक्व हरकतों पर हंस पड़ीं।

कुछ मायनों में बड़े होने से इंकार करने के साथ-साथ एसएस की चतुराई और जन्मजात प्रवृत्ति भी थी जो अपने आस-पास हो रही सभी घटनाओं पर नजर रखती थी।

कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल के डॉ. मुले और डॉ. राय से लेकर एम्स के डॉ. संजीव सिन्हा, जो प्यार और स्नेह के कारण यहां आए थे, और नर्सिंग स्टाफ तक, एसएस ने उन सभी का ध्यान रखा। और निश्चित रूप से अंबानी परिवार का विशेष उल्लेख किया।

उन्होंने अपने देखभाल करने वालों की तारीफ करते हुए कहा, "आपको ऐसा महसूस होता है कि आप मां कोकिलाबेन अंबानी के आंचल में हैं।" "उन्होंने मुझे अपना सबसे अच्छा कमरा दिया। टीना (अंबानी) बहुत दयालु थीं। उन्होंने मुझे घर से बढ़िया तेल रहित शाकाहारी खाना भी भेजा।" एसएस को यह इतना पसंद आया कि डॉक्टरों द्वारा छुट्टी दिए जाने के बाद भी वे एक और पखवाड़े तक यहीं रहे।

उनके घर लौटने तक वीआईपी मेहमानों की सूची काफी लंबी और प्रभावशाली हो गई थी: राजनाथ सिंह, विजय गोयल, शिवराज सिंह चौहान, प्रफुल्ल पटेल, सलमान खान, अनिल कपूर, योग गुरु विक्रम चौधरी, गोविंदा, अमिताभ बच्चन, सुभाष घई, लालकृष्ण आडवाणी, अरुण जेटली और सुषमा स्वराज कुछ ऐसे लोग थे जो अचानक वहां पहुंचे, जबकि यशवंत सिन्हा ने एसएस को घर वापस ले जाने के लिए बड़े भाई की भूमिका निभाई।

इस समय तक, पूरा स्टाफ एसएस के साथ एक ही तरंगदैर्ध्य पर था और उसी के अनुसार उसे खुश करने लगा, यहाँ तक कि वह उसी भाषा में बात करने लगा जो वह घर पर बोलता था। यह विशेष रूप से हृदय शल्य चिकित्सक डॉ. मुले के लिए सच था, जिन्होंने सर्जरी करके उसे फिर से जीवंत करने से कहीं अधिक किया। जब वह ओटी से बाहर आया, तो डॉक्टर ने पूनम से कहा, "मैंने उसके दिल पर तुम्हारा नाम पढ़ा। लेकिन उस पर कई अन्य नाम भी लिखे थे।" उन्होंने मजाक उड़ाया और मुस्कुराते हुए कहा, "चिंता मत करो, मैंने उन सभी को मिटा दिया है।"

एसएस ने तुरंत जवाब दिया, "उन्होंने उन्हें हटा दिया ताकि मैं कुछ नए नाम जोड़ सकूं।"

वह अड़ियल व्यक्ति फिर से खेल में शामिल हो गया, तथा अपनी पार्टी के भीतर और बाहर लड़ाई के लिए पूरी तरह तैयार हो गया।

वह फिर से खामोश हो गया था।